















## भारतीय ज्ञान व ज्ञारखंड

**झारखण्ड** के राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन एक कार्यक्रम में सही कहा है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली विश्व में सर्वोत्तम है। इसके लिए हमलोगों में गौरव का भाव होना चाहिए। भारतीय ज्ञान परंपरा में जीवन जीने के तरीकों के साथ मानव मूल्य भी स्थापित थे। शिक्षा का अर्थ सिर्फ़ डिग्री ही नहीं, बल्कि ज्ञान अर्जित करना भी है। ऐसा ज्ञान, जिसमें बुजुर्गों के प्रति सम्मान हो, समाज के प्रति लगाव हो और विश्व बंधुत्व की भावना हो। उन्होंने कहा कि हमें भारतीय संस्कृति के संरक्षण के लिए प्रयास करना चाहिए। योग और आयुर्वेद की भारतीय पद्धति विश्व के लिए अनुकरणीय है। ऐसे में प्रत्येक व्यक्ति को राज्यपाल के वक्तव्य को गंभीरता से लेने की जरूरत है। कारण पूरी दुनिया में हमारी भारतीय संस्कृति की कोई शान

शिक्षा का अर्थ सिर्फ डिग्री ही नहीं, बल्कि न अर्जित करना भी है। सा ज्ञान, जिसमें बुजुर्गों के प्रति सम्मान हो, माज के प्रति लगाव हो और विश्व बंधुत्व की आवाना हो। उन्होंने कहा हमें भारतीय संस्कृति संरक्षण के लिए प्रयास करना चाहिए। योग और आयर्वेद की भारतीय पद्धति विश्व के लिए अनुकरणीय है।

4

क प्रधान उद्देश्य म एक ह। इस शिक्षा नात के फलत्वरूप भारत निकट भविष्य में नवाचारों का केन्द्र बनने की दिशा में आगे बढ़ चला ह। राज्य में संस्कृत शिक्षा को आगे बढ़ाने की जरूरत है। कारण यह हमारी संस्कृति की संरक्षिका है, जिसमें सुदृढ़ सामाजिक-परिवारिक व्यवस्था के आधारभूत तत्व सन्निहित हैं। ज्ञान की कोई भी शाखा संस्कृत से अछूती नहीं है। इसीलिए संस्कृत का अध्ययन सभी लोगों को करना चाहिए। आयुर्वेद, योग, संगीत शास्त्र आदि विभिन्न विद्याएं संस्कृत से ही विकसित हुई हैं। भारतीय संस्कृति और दर्शन का वैशिक प्रभाव निर्विवाद रूप से दृष्टिगोचर होता है। संस्कृत के शास्त्रों की धरोहरों को भावी पोढ़ी के लिए न केवल संरक्षित किया जाना चाहिए, बल्कि उसके अनुसंधान की भी आवश्यकता है। ऋतुपरिवर्तन, आतंकवाद, मानसिक तनाव जिससे मानव जाति जूँ रही है, इन सबके निदान में भारतीय ज्ञान परम्परा का महत्वपूर्ण योगदान है। वर्तमान समय में इस बात की आवश्यकता है। बहरहाल संस्कृत वाङ्मय में भारतीय ज्ञान परम्परा न केवल श्रुति परम्परा से संरक्षित है, बल्कि संस्कृत की विशाल ज्ञान राशि हमारे मर्हियों के द्वारा लिपिबद्ध भी की गई है। ऐसे में इन तमाम बातों को ध्यान रखते हुए हमें सरकार को आगे बढ़ने से कई प्रकार की समस्याओं का स्वतःसमाधान हो जायेगा। बहरहाल ज्ञारखंड की वादियों में ज्ञान की धारा बहती है। अब बस जरूरत है उसे सहेज कर रखने की। राज्यपाल के वक्तव्य वर्तमान समय में सारगर्भित हैं। ऐसे में ज्ञारखण्ड सरकार को चाहिये कि ज्ञान की अविरल धारा को स्वर देने में सहयोग करें। कारण यहां का ज्ञानमय कोष का लोहा पूरा देश मानता है।

## आत्मनिर्भर भारत का अभूतपूर्व अंतरिक्ष अध्याय

**नए** भारत की विकास यात्रा में चंद्रयान का सफल अभियान भी शामिल हुआ। आत्मनिर्भर भारत का यह अभूतपूर्व अव्याय है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सरकार के प्रयासों से संकल्प सिद्ध हो रहे हैं। इसके पहले कोरोना की दो वैक्सीन बना कर भारत ने अपनी प्रतिभा का दुनिया को प्रमाण दिया था। सैकड़ों देशों तक भारतीय वैक्सीन पहुंची थी। पिछले दिनों अमृत रेलवे-स्टेशन निर्माण कार्य का शुभारंभ हुआ था। डिजिटल अभियान में भारत की प्रगति शानदार है। यह सब अमृतकाल की गरिमा बढ़ा रहे हैं। इसी अवधि में भारत जी-20 का अध्यक्ष बना। दुनिया भारत के विचारों से परिचित हो रही है। प्रधानमंत्री मोदी ने इससे पहले चंद्रयान अभियान की विफलता पर इसरो के वैज्ञानिकों का हौसला बढ़ाया था। उन्होंने कहा था कि हमारे संस्कार, हमारा चिंतन, हमारी सोच, इस बात से भरी पड़ी है, जो हमें कहते हैं- व्यं अमृतस्य पुत्रा। हम अमृत की संतान हैं जिसके साथ अमरत्व जुड़ा हुआ रहता है। अमृत के संतान के लिए न कोई रुकावट है, न हो कोई निराशा। हमें पीछे मुड़कर निराशा की तरफ नहीं देखना है, हमें सबक लेना है, सीखना है, आगे ही बढ़ते जाना है और लक्ष्य की प्राप्ति तक रुकना नहीं है। हम निश्चित रूप से सफल होंगे। मिशन के अगले प्रयास में भी और उसके बाद के हर प्रयास में कामयाबी हमारे साथ होगी। 21वीं सदी में भारत के सपनों और आकांक्षाओं को पूरा करने से पहले हमें कोई भी क्षणिक बाधा रोक नहीं सकती। उनका कथन सत्य साबित हुआ। चंद्रयान-3 की चंद्रमा पर सफलतापूर्वक लैंडिंग होते ही प्रधानमंत्री मोदी ने तिरंगा लहराया। कहा, जब हम ऐतिहासिक क्षण देखते हैं तो हमें बहुत गर्व होता है। ये नये भारत का सूर्योदय है। हमने धरती पर संकल्प किया और चांद पर उसे साकार किया। भारत अब चंद्रमा पर है। ये क्षण मुश्किलों के महासागर को पार करने जैसा है। ये क्षण जीत के चंद्रपथ पर चलने का है। ये क्षण 140 करोड़ धड़कनों के सामर्थ्य का है। ये भारत में नई ऊर्जा, नई चेतना का है। अमृतकाल की प्रथम प्रभा में सफलता की ये अमृतवर्षा हुई है हमने धरती पर संकल्प लिया और चांद पर उसे साकार किया। जब हम अपनी आंखों के सामने इतिहास बनते देखते हैं तो जीवन धन्य हो जाता है। यह पल विकसित भारत के शांखनाद का है। इससे पहले कोई भी देश चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव तक नहीं पहुंचा है हमारे वैज्ञानिकों की मेहनत से हम वहां तक पहुंचे हैं। भारत का सफल चंद्रमा मिशन अकेले भारत का नहीं है। यह सफलता पूरी मानवता की है। प्रधानमंत्री मोदी ने नये भारत का रोडमैप बनाया था उसमें भारत को विकसित देशों की श्रेणी में पहुंचाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था। अंतरिक्ष क्षेत्र में क्षमता का वाणिज्यिक उपयोग के लिए न्यू स्पेस ईंडिया लिमिटेड नाम से नये सार्वजनिक उपक्रम का गठन किया गया है। इसका मकसद इसरो के लाभ का पूरा उपयोग करना है। यह संकल्प सिद्ध हुआ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के न्यू ईंडिया विजन में विकास और लोको कल्याण का समावेश है। भारत को विकसित बनाने का संकल्प है। संकल्प को सिद्ध करने की इच्छाशक्ति है। उनकी नौ वर्ष की यह यात्रा यही प्रमाणित करती है। इस नये भारत का रेलवे भी नया

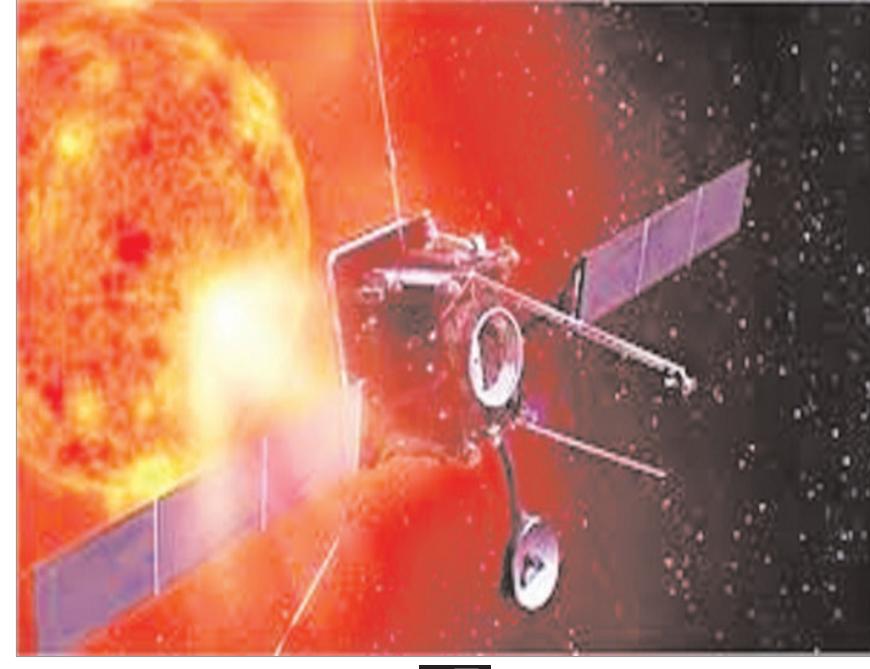
डिजिटल अभियान में  
भारत की प्रगति शानदार  
है। यह सब अमृतकाल  
की गरिमा बढ़ा रहे हैं।  
इसी अवधि में भारत  
जी-20 का अध्यक्ष  
बना। दुनिया भारत के  
विचारों से परिचित हो  
रही है।



चंद्रयान

है, क्योंकि रेलवे में विकास का दृष्टि से भी नौ साल बेमिसाल हैं। देश के विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों और तीर्थ स्थानों को जोड़ने वे लिए इन दिनों भारत गैरव यात्रा ट्रेन और भारत गैरव ट्रूस्ट ट्रेन भी चल रही है। प्रधानमंत्री ने दुनिया को भारतीय विरासत से परिचित करा रहे हैं। उनके प्रयासों से अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जा रहा है। आजादी के अमृतकाल में भारत के जी-20 की अध्यक्षता करना बड़ा अवसर है। यह देशों का समूह है जो विश्व के सकल धरेलू उत्पाद जीडीपी में 85 प्रतिशत की भागीदारी रखता है।

# अब सूर्य पर भारत फतेह से दुनिया चमत्कृत होगी



विफ्फाट हात रहत है, हमशा से रहस्य का विषय रहा है। लेकिन ये विफ्फाट कब होंगे और इसके प्रभाव क्या होंगे, इसकी सटीक जानकारी धरतीवासियों को नहीं है। ऐसे में इस टेलीस्कोप का एक उद्देश्य इनकी स्टडी करना है। वैज्ञानिकों का मानना है कि मिशन के तहत अलग-अलग तरह के डाटा को जुटाकर ऐसी व्यवस्था बनाई जा सकेगी जिससे धरती को होने वाले नक्सान के बारे में पहले

आदित्य एल-1 को पृथ्वी-सूर्य प्रणाली की ऑर्बिट के पांच बिंदुओं में से एक लैग्रेंज-1 में स्थापित किया जायेगा। यहां सूर्य पर ग्रहण के दौरान भी नजर रखी जा सकती है। यह पॉइंट पृथ्वी से 15 लाख किमी दूर है।



इन दिनों

अंतरिक्ष अथव्यवस्था में भारत का हिस्सेदारी भी बढ़ी, जो कि फिलहाल सिर्फ दो फीसदी है। इसमें बृद्धि के लिए इसरो को उसकी महत्वाकांक्षाओं के अनुरूप सरकार से हरसंभव मदद मिलनी चाहिए। नया भारत एवं सशक्त भारत निर्मित करने की अनेक बहुदेशीय एवं बहुआयामी योजनाएं आजादी के अग्रताकाल में आकर लेने के लिये उजावली हैं, उन्हीं योजनाओं में अंतरिक्ष के अनुसंधान एवं अध्ययन से जुड़ा योजनाओं में से 'आदित्य-एल 1' एक बड़ी परियोजना है, जो सूर्य की गतिशीलता और उसके पास के मौसम की समझ में क्रांतिकारी बदलाव ला सकती है। सूर्य का नाम आदित्य भी है, अतः इस नाम का अभियान या यान सबके आर्कषण का केंद्र बने, तो कोई आश्वय नहीं। यह अभियान दुनिया में एक भारतीय शब्द का प्रचार और भारत के अंतरिक्ष अभियान के स्वदेशी होने

का अहसास करायगा। याजना के अनुसार, यह यान कुल 125 दिन में सूर्य के पास की कक्षा में पहुंच जायेगा। सूर्य के एकदम निकट जाने के बारे में तो कोई सोच नहीं सकता, पर सूर्य के पास एक सुरक्षित कक्षा है जहां पहुंचकर कोई यान परिक्रमा करते हुए सूर्य को देख-परख सकता है। यह आदित्य अंतरिक्ष यान सात उन्नत उपयोगी उपकरणों से सुसज्जित है, जो सूर्य की विभिन्न परतों, प्रकाशमंडल और क्रोमोस्फीयर से लेकर सबसे बाहरी परत, कोरोना तक की जांच करने के लिए तैयार किये गये हैं। इरादा यह है कि सूर्य के पास घटित होने वाली तमाम गतिविधियों का डाटा एकत्र किया जाए, ताकि सूर्य की कुल क्रिया-प्रतिक्रिया को समझा जा सके। हम तेज सूर्य से आंख नहीं मिला पाते हैं, पर भारत का आदित्य यान सूर्य से सीधे आंख मिलाने में सक्षम होगा, इसमें लगे चार उपकरण तो केवल सूर्य को देखने का काम करेंगे, मतलब इस अभियान का मूल लक्ष्य सूर्य को करीब से देखना है। भारत पूरातन काल से ज्ञान-विज्ञान का असीम

गेंद आई तो फिर  
दहा की हो गई

**प्रतिवर्ष** 29 अगस्त को भारत में हॉकी के पूर्व कप्तान मेज ध्यानचंद की जयंती को 'खेल दिवस' के रूप में मनाया जाता है। उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में 20 अगस्त 1905 को जन्मे ध्यानचंद हॉकी के ऐसे महान खिलाड़ी औंडे देशभक्त थे कि उनके करिशमाएँ खेल से प्रभावित होकर जब एक बार जर्मनी के तानाशाह हिटलर ने उन्हें अपने देश जर्मनी की ओर रुखेलने का न्यौता दिया तो ध्यानचंद ने उसे विनम्रतापूर्वक ठुकराकर सदा अपने देश के लिए खेलने का प्रण लिया। वो मूल रूप रुबुदेलखंड के थे। उन्हें बुदेलखंड में आज भी हर कोई प्यार से दद कहकर पुकारता है। हालांकि उन्हें बचपन में खेलने का कोई शौक नहीं था और साधारण शिक्षा ग्रहण करने के बाद वे सोलह साल के आयु में दिल्ली में सेना की प्रथम ब्राह्मण रेजीमेंट में सिपाही के रूप में भर्ती हो गये थे। सेना में भर्ती होने तक उनके दिन में हॉकी वे प्रति कोई लगाव नहीं था। सेना में भर्ती होने के बाद उन्हें हॉकी खेलने के लिए प्रेरित किया हाँकॉर्स खिलाड़ी सूबेदार मेजर तिवारी ने जिनकी देखरेख में ही ध्यानचंद हॉकी खेलने लगे और बहुत थोड़ा समय में ही हॉकी के ऐसे खिलाड़ी बन गये कि उनकी हॉकी स्टिक मैदान में दानादन गोल दागने लगी। उनकी हॉकी स्टिक से गेंद अक्सर इस कदर चिपकी रहती थी वि विरोधी टीम के खिलाड़ियों को लगता था, जैसे ध्यानचंद किस जारु हॉकी स्टिक से खेल रहे हैं। इसी शक के आधार पर एक बाह्यलैंड में उनकी हॉकी स्टिक तोड़कर भी देखी गई कि कहं उसमें कोई चुम्बक या गोंद तो नहीं लगा है लेकिन किसी को कुछ नहीं मिला। उन्हें अपने जमाने का हॉकॉर्स



यागश कुमार गायल

भारतीय ओलम्पिक संघ द्वारा ध्यानचंद को शताब्दी का खिलाड़ी घोषित किया गया था। 1922 में सेना में भर्ती होने के बाद से 1926 तक ध्यानचंद ने केवल आर्मी हॉकी और रेजीमेंट गोम्प ग्रेले।

 ३८

राम लेखन शैला संक्षिप्त, द्वारा वस्त्र  
संकट हरन, माल मुखि रूप। राम लेखन शैला संक्षिप्त,

फेसबुक वॉल से

हमेशा याद रखना  
अगर एक दरवाज़ा बंद होता है  
तो परमात्मा  
दस दरवाज़े और खोल देता है

चंद्रयान है, क्योंकि रेलवे में विकास कंपनी द्वाटा से भी नौ साल बैमिसाल है। देश के विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों और तीर्थ स्थानों को जोड़ने वेलिए इन दिनों भारत गैरव यात्रा ट्रेन और भारत गैरव ट्रूस्ट ट्रेन भी चल रही है। प्रधानमंत्री नरेन मोदी विश्व कल्याण के द्विष्टांग दुनिया को भारतीय विरासत से परिचित करा रहे हैं। उनके प्रयास से अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जा रहा है। आजादी के अमृतकाल में भारत के जी-20 की अध्यक्षता करना बड़ा अवसर है। यह ऐसे देशों का समूह है जो विश्व वेस्ट क्लस्कल धरेलू उत्पाद जीडीपी में 83 प्रतिशत की भागीदारी रखता है।

502, मंगलमूर्ति हाईट्स, रानी बगान, हरमू रोड, रांची से हर्षवर्धन बजाज द्वारा प्रकाशित एवं पारिजात माइनिंग इण्डस्ट्रीज (इण्डिया) प्रा.लि. **C/O** शिवासाई पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा नं : **BIHHIN/1999/155**, प्रधान संपादक : सुरेश बजाज, संपादक : हर्षवर्धन बजाज, प्रेस कार्यालय : रांची रोड, रेड्मा, मेदिनीनगर (डालटनगंज) पलामू-822102, फोन नंबर : 222539, फैक्स नंबर : 0651-2283384, फैक्स नंबर : 0651-2283386, दिल्ली कार्यालय : 25, निचली मंजिल, तानसेन मार्ग, (बंगली बाजार), [bvh@gmail.com](mailto:bvh@gmail.com)।







